

पंजाब की लोक कलाएं

डॉ. सुधा शर्मा

असिस्टेंट प्रो. (संगीत वादन विभाग), सरूप रानी सरकारी कॉलेज, अमृतसर

E-mail: sudhasharma5858@gmail.com

सारांश

भारत के प्रत्येक क्षेत्र में विविधता दिखाई देती है। वह विविधता चाहे धार्मिक मान्यताओं की हो, विभिन्न परम्पराओं की या फिर विभिन्न कलाओं की हो। भारतीय संस्कृति अपनी इन्हीं विविधताओं से सुसज्जित एवं समृद्ध रही है। किसी भी प्रदेश की विशेषता उस क्षेत्र की लोक संस्कृति में ही स्पष्ट रूप से दिखाई देती है और विभिन्न लोक कलाएं उस क्षेत्र की लोक संस्कृति का अभिन्न अंग होती हैं। भारत के अन्य प्रदेशों में से पंजाब की लोक संस्कृति की परंपरा बेहद विशाल एवं समृद्ध है। जिसकी चर्चा आज विश्व भर में की जाती है। पंजाब की लोक कलाएं पंजाबी जनजीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। यहाँ के लोगों ने पीढ़ी-दर-पीढ़ी चली आ रही अपनी इन लोक परंपराओं और लोक विरासत को आज भी व्यवहारिक रूप से सुरक्षित रखा है। जोकि पंजाबी के विभिन्न क्षेत्रों में पंजाबी संस्कृति के रूप में प्रचलित हैं। यह लोक कलाएं यहां के लोगों के स्वभाव की मूल प्रवृत्तियों और रुचियों को अपने में संजोए हुए हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में पंजाब की विभिन्न लोक कलाओं पर चर्चा करने का प्रयास किया गया है।

मुख्य शब्द: समाज, संस्कृति, लोक कला, लोक साहित्य, लोक गायन, लोक भाषा, लोक नृत्य।

विषय प्रवेश

कला का महत्व मानव जीवन के साथ हमेशा से ही जुड़ा रहा है। अपने आंतरिक भावों और विचारों को किसी दूसरे के सामने व्यक्त करने की तीव्र इच्छा आरम्भ से ही मानव मन में रही है। इस तीव्र इच्छा को प्रकट करने हेतु मानव ने विभिन्न माध्यमों को अपना सहारा बनाया। इन विभिन्न माध्यमों को ढूंढने में ही साहित्य, संगीत और विभिन्न प्रकार की न जाने कितनी ही कलाओं ने जन्म लिया। जनसाधारण में पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलती आ रही इन पारम्परिक कलाओं को ही लोक कलाएं कहा जाता है। यदि यह कहा जाए कि मानव जीवन के विकास में लोक कलाओं का योगदान और महत्व बहुत ही सराहनीय है तो कोई अतिशयोक्ति न होगी।

“लोक कला शब्द जिस अर्थ में प्रयुक्त हो रहा है, वह अर्थ हमारे लिए नया नहीं है। वस्तुतः उसे प्राकृत कला कहा जाना चाहिए। प्राकृत शब्द का अर्थ अपरिष्कृत है। अशिक्षित अथवा असंस्कृत व्यक्ति को प्राकृत कहा जाता है। अतएव जिस कला को सीखने के लिए किसी विशिष्ट शिक्षा, अभ्यास अथवा साधना की आवश्यकता नहीं होती, वह प्राकृत कला है।”¹

भारत एक ऐसा देश है जहां सबसे अधिक लोक कलाओं ने जन्म लिया और तत्पश्चात इन कलाओं का विकास भी हुआ। इन लोक कलाओं द्वारा ही लोक संस्कृति का

निर्माण होता है। लोक कलाओं की रचना का उद्देश्य किसी क्षेत्र विशेष की परंपराओं को सजीव रूप प्रदान करना और उन्हें चिरकाल तक जीवित रखना होता है। लोक कलाओं को अभिव्यक्त करने वाला कोई व्यक्ति विशेष न होकर अपितु संपूर्ण लोक समाज ही होता है। लोक कलाओं का रचनाकार अपने व्यक्तित्व को समाज में समर्पित कर देता है। लोक कलाएं किसी भी प्रदेश की संस्कृति और परंपराओं की पहचान होती है। किसी भी क्षेत्र की विभिन्न लोक कलाएं वहां के लोक जीवन का दर्पण होती हैं। इन्हीं लोक कलाओं के माध्यम से ही जनसाधारण के जीवन का समस्त ज्ञान हमें प्राप्त होता है। यह लोक कलाएं किसी एक निश्चित समय के साथ संबंधित नहीं होती अपितु बहते पानी की तरह निरंतर रूप से परंपराओं के रूप में बहती चली जाती हैं। यह लोक कलाएं जनसाधारण की वह विरासत हैं जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक मौखिक रूप से संचारित होती रहती हैं और प्रचार में आती हैं। लोक जीवन से संबंधित प्रत्येक विषयों और क्रियाओं का उल्लेख इन लोक कलाओं में निहित रहता है और बड़ी सहजता से यह अपने आसपास के जीवन के लिए आकर्षण का माध्यम बन जाती हैं। यहां हम पंजाब की विभिन्न लोक कलाओं की चर्चा संक्षिप्त रूप में करेंगे। पंजाब में प्रचलित कुछ लोक कलाओं का विवरण निम्नलिखित है।

1. लोक साहित्य

लोक साहित्य से अभिप्राय इस साहित्य से है जिसकी रचना लोक करता है। लोक साहित्य उतना ही प्राचीन है जितना कि मानव। इसलिए उसमें जनजीवन की प्रत्येक अवस्था, प्रत्येक वर्ग, प्रत्येक काल एवं प्रकृति सब कुछ समाहित होता है। लोक साहित्य समाज की आत्मा का उज्ज्वल प्रतिबिम्ब है। किसी भी देश की जातीय, सामाजिक, ऐतिहासिक, धार्मिक एवं आर्थिक स्थिति के विषय में अगर जानकारी प्राप्त करनी हो तो उस देश के लोक साहित्य को पढ़ कर की जा सकती है। लोक साहित्य में लोक संस्कृति और लोक सभ्यता का वास्तविक स्वरूप देखने को मिलता है।

पंजाबी लोक साहित्य में संपूर्ण लोक गीतों, गाथाओं, कहानियों, कविताओं का लिखित रूप मिलता है। पंजाबी लोक संगीत के साहित्य में लोक गीतों का काव्य पक्ष जिसमें विभिन्न लोक गीतों के प्रकार, लोक गाय शैलियों का काव्य पक्ष, उसकी जानकारी और विभिन्न लोक वाद्यों की जानकारी, लोक धुनों के लेखन कार्य से संबंधित जानकारी शामिल है।

2. लोक गायन

लोगों द्वारा लोक गीतों का गायन करना ही लोक गायन कहलाता है। पंजाबी लोक संगीत की लोक गायन परंपरा का मुख्य स्त्रोत विभिन्न प्रकार के लोक गीत, लोक कथाएं, लोक किस्से इत्यादि हैं। पंजाब की लोक गायन परंपरा का क्षेत्र वास्तव में बहुत ही विशाल है। इसके अंतर्गत जन्म के गीत, विवाह, शादी से संबंधित गीत, बाल गीत, लोरियां विभिन्न प्रेम कथाएं, किस्से, बोलियां, टप्पे, माहिया, ढोला इत्यादि सम्मिलित हैं।

3. लोक वादन

विभिन्न लोक गीतों की धुनों का वादन अलग-अलग लोक वाद्यों पर करना ही लोक वादन कहलाता है। पंजाबी लोक संगीत की वादन परंपरा में संपूर्ण पंजाबी लोक गीतों की धुनों का वादन स्वतंत्र एवं संगति के रूप में किया जाता है। इस वादन परंपरा में विभिन्न तालों में विभिन्न लोक गीतों की धुनें निबद्ध होती हैं। इसके अतिरिक्त इस लोक वादन परंपरा में लोक वाद्यवृंद की भी परंपरा प्रचलित है।

4. लोक नृत्य

जब भी मनुष्य अपनी किसी सफलता को प्राप्त करता है तत्पश्चात वह खुश होता है। तब वह सब कुछ भूल कर नाचता, उछलता और कूदता है। इसी क्रिया को ही लोक नृत्य कहा जाता है एवं यह मनुष्य की एक स्वाभाविक क्रिया है।

“लोक नृत्य सभी कलाओं में अति प्राचीन है। मनोविज्ञान के आधार पर मनुष्य में भाव प्रकाशन की आकांक्षा जन्मजात मानी गई। सृष्टि के प्रारम्भ में भावहीन मानव

ने भाव प्रकाश के लिए शरीर के हाव-भाव का ही आश्रय लिया होगा। भाव प्रकाशन की सार्थक मुद्राओं को ही भाषा में नृत्य कहा है।”²

लोक संगीत में गायन व वादन के साथ-साथ लोक नृत्य का भी विशेष स्थान है। लोक नृत्य, लोक संगीत की तीनों कलाओं का संगम है। इसमें लोक जनजीवन के मन की भावपूर्ण अदाएं व उनके हाव-भाव संगीतमय रूप धारण कर विभिन्न गीत प्रकारों और लय, ताल के माध्यम से उभर कर सामने आते हैं। पंजाबी लोक संगीत में नृत्य के विभिन्न प्रकार जैसे : गिद्धा, भांगडा, झूमर, लुडडी, किकली इत्यादि शामिल हैं। इन लोक नृत्यों के साथ लय और ताल देने के लिए ढोल, ढोलकी, बुरगु, काटो, घड़ा, चिमटा इत्यादि घन और अवनद्ध वाद्यों का प्रयोग किया जाता है।

लोक भाषा

“किसी समुदाय द्वारा आपस में परस्पर जिस भाषा के सहारे जीवन-व्यापार का संचालन किया जाता है, उसे साधारणतः लोक भाषा कहा जाता है।”³

अतः जनसाधारण की वह भाषा, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति सरल माध्यम से विचारों और सुख, दुःख के भावों को व्यक्त कर सकता हो वह लोक भाषा कहलाती है। छोटे से छोटे वाक्य, काव्य और छोटी से छोटी बात इस लोक भाषा का लक्षण होती हैं। लोक भाषा में वास्तव में परंपरा जीवित रहती है। भाषा, लोक संगीत का भी प्रमुख अंग है क्योंकि स्वर और लय से सुसज्जित इन लोकगीतों में भावों की अभिव्यक्ति भाषा के द्वारा ही की जा सकती है। लोक गीत समान्यतः स्थानीय लोक भाषा में ही निहित होते हैं। लोक भाषाओं की विशेषताओं को देखा जाए तो व्यवहारिक रूप में यह अति सरल और सुमधुर होती हैं।

इसलिए इनमें कठिनता और परिलता नहीं पाई जाती। इसी लिए इसके द्वारा सरलता से भावों को सफलतापूर्वक अभिव्यक्त किया जा सकता है। पंजाब की स्थानीय भाषा पंजाबी है तो इसके लोक गीत यहां की लोक भाषा पंजाबी में ही लिखे एवं गाए जाते हैं। उपरोक्त वर्णित लोक कलाओं के अतिरिक्त और भी कई लोक कलाएं जैसे कि चित्रकारी करना, फुलकारी की कढ़ाई करना, कठपुतली का नाच, बुनाई करना इत्यादि हैं; जो पंजाब की संस्कृति को और समृद्ध बनाती हैं। यह विभिन्न लोक कलाएं जनमनोरंजन के साथ-साथ पंजाबी संस्कृति का महत्वपूर्ण अंग भी हैं।

निष्कर्ष

अंत में कहा जा सकता है कि किसी भी क्षेत्र की लोक कलाएं स्थानीय जनजीवन के प्रत्येक पक्ष को दर्शाती हैं। वास्तव में लोक कलाएं जन साधारण के दैनिक

जीवन की क्रियाओं और कार्यों पर ही आधारित होती हैं। यह लोक कलाएं किसी क्षेत्र विशेष की लोक विरासत कहलाती हैं और कहीं न कहीं स्थानीय लोगों के लिए व्यावसायिक रूप में भी प्रचार-प्रसार में सराहनीय कार्य किए गए हैं और किए जा रहे हैं जिसके फलस्वरूप लोक कलाओं की इस परंपरा और विरासत को आने वाली पीढ़ियों तक सफलतापूर्वक पहुंचाया जा सके।

संदर्भ

1. गर्ग, डॉ. लक्ष्मीनारायण, संपादकीय, संगीत पत्रिका, पृ. 5, जनवरी 1966.
2. अवस्थी शांति, लोक नृत्य और लोक वाद्यों में लोक जीवन की व्याख्या, संगीत पत्रिका, पृ. 41, जनवरी 1966.
3. <https://hi.m.wikipedia.org>. cited on 10 July 2023.